२. सींकवाली

-सुनीता

श्रवणीय

'वैष्णव जन ते तेणे कहिए' पद सुनिए तथा उसका आशय सुनाइए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों को पद सुनाइए । ● पद में आए कठिन शब्द बताने के लिए कहें । ● पद का आशय सुनाने के लिए कहें । ● गुट बनाकर प्रस्तुति के लिए प्रेरित करें ।

सारा गाँव उन्हें कहता सींकवाली ताई । बड़े भी, छोटे भी, सभी इसी नाम से बुलाते । सालवन गाँव में जब से ब्याहकर आई थीं ताई तबसे उनके गाँव का सींक उनके नाम से जुड़ गया । ऐसा जुड़ा कि खुद अपना नाम तक उन्हें याद नहीं ।

कोई पचास बरस तो हो ही गए सींकवाली ताई को इस गाँव में आए । तब सोलह बरस की थीं । अब सत्तर से कुछ ही कम होंगी । इस बीच कौन-सा दुख नहीं झेला उन्होंने । पति किशोरीलाल फौज में थे । बड़े ही दिलेर और खुशमिजाज । हर कोई उनकी तारीफ करता । नई दुलहन बनकर सालवन गाँव में आईं सींकवाली ताई के वे सबसे खुशियों भरे दिन थे । मगर शादी के चार-पाँच बरस ही पति की मृत्यु की खबर आ गई । उसके बाद जल्दी ही सास-ससुर का साया भी सिर से उठ गया । सींकवाली ताई रह गईं अकेली, निपट अकेली ।

हालाँकि अकेली भले ही हों, दबंग इतनी थीं कि मजाल है कोई दबा ले या कोई उलटी-सीधी बात कह दे । एक की चार सुनाती थीं । इसलिए आस-पड़ोस के लोग भी जरा दूर-दूर ही रहते थे । यों भी देखने में खूब लंबी-चौड़ी, खूब ऊँची कद-काठीवाली थीं सींकवाली ताई । खूब साँवला, पक्का रंग । चेहरे पर ऐसा मर्दानापन कि कोई दूर से देख के ही डर जाए और बोली ऐसी सख्त, कड़वी कि जिसे दो-चार खरी-खरी सुना दें, उसे रात भर नींद न आए ।

सबसे ज्यादा तो डरते थे गाँव के बच्चे उनसे । जरा-सी बात पर घुड़क देतीं । कभी-कभी तो सामने वाले मैदान में ज्यादा शोर मचाने पर पास में पड़ी लाठी फर्श पर ऐसे ठकठकातीं कि बच्चे दूर भागते नजर आते । कुछ तो उनकी शक्ल देखते ही उड़न-छू हो जाते ।

डर तो शुरू में नीना को भी उनसे लगता था । नानी के कहने पर कभी-कभी सींकवाली ताई से लस्सी लेने चली जाती थी । सींकवाली ताई कभी तो उसे बेबात घुड़क देतीं और कभी प्यार से पास बिठाकर बातें करने लगतीं, " आ बैठ, तनिक मक्खन निकालकर अभी लस्सी देती हूँ ।" नीना डरते-डरते बैठ जाती और सींकवाली ताई को मक्खन निकालते देखती रहती । बीच-बीच में अपने स्कूल या नानी की कोई बात छेड़ देती ।

परिचय

जन्म : २९ जनवरी १९५४, सालवन (हरियाणा)

परिचय: छोटे बच्चों और किशोरों के लिए सहज-सरस कहानियाँ लिखने में सुनीता जी को बहुत आनंद मिलता है । पत्र-पत्रिकाओं में अनेक आलोचनात्मक लेख और बच्चों के लिए लिखी गई कहानियाँ, आलेख छपे हैं । आपने विभिन्न कहानियों, कविताओं का अनुवाद भी किया है।

प्रमुख कृतियाँ : साकरा गाँव की रामलीला, रंग-बिरंगी कहानियाँ, दादी माँ की मीठी-मीठी कहानियाँ, बुढ़िया की पोती आदि । इनकी महान युगनायकों पर लिखी जीवनीपरक पुस्तक 'धुन के पक्के' खासी चर्चित हुई है ।

गद्‍य संबंधी

वर्णनात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, प्रवाही-विस्तृत वर्णन ही वर्णनात्मक कहानी है ।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखिका ने कठोरता में छुपी कोमलता, बच्चों के प्रति निर्मल वत्सलता, सहानुभूति की चाहत, अवगुणों का गुणों में परिवर्तन आदि स्थितियों को बड़े सुंदर ढंग से दर्शाया है ।

सींकवाली ताई को उसकी बातें अच्छी लगतीं । पूछतीं, ''तुझे मक्खन अच्छा लगता है न ! ले खा ।'' और कटोरी में ढेर सारा मक्खन डालकर सामने रख देतीं । कभी-कभी वे चूल्हे के पास बिठाकर बातें करती जातीं और तवे से उतारकर मक्के की गरम रोटी खिलातीं । ऊपर ढेर-सा मक्खन । नीना का जी खुश हो जाता । हालाँकि जाने क्या बात थी कि सींकवाली ताई के इतना प्यार जताने पर भी वह अंदर ही अंदर डरी-सी रहती । लगता, बस अभी सींकवाली ताई सुर बदलने ही वाली हैं और फिर ऐसे कड़वे बोल सुनाएँगी कि रोते-रोते भागकर जाना होगा ।

मगर आश्चर्य ! सींकवाली ताई, नीना से कभी नाराज नहीं होती थीं । कभी-कभार रूखा भले ही बोल दें, पर डाँटा कभी नहीं । सच तो यह है कि नीना उन्हें अच्छी लगने लगी थीं । शायद इसलिए कि नीना की भोली बातें सींकवाली ताई के कठोर दिल को पिघलाकर मुलायम मक्खन-सा बना देती थीं । नीना उनसे कहती, ''ताई, कहानी सुनाओ ना !''

सींकवाली ताई चाहे-अनचाहे शुरू हो जातीं और फिर उन्हें भी रस आने लगता । सुनाती जातीं और खुद भी हँसते-हँसते दोहरी होती जातीं । उनकी कहानियाँ थीं ही ऐसी मजेदार । पिद्दी-पिद्दे की कहानी उनकी सबसे प्रिय कहानी थी । जितनी बार सुनातीं, खूब हँसतीं । हँसते हुए उनका पूरा शरीर हिलता और खुशी की हिलोर से भर जाता था । कभी-कभी नीना भी उन्हें अपनी किताब में लिखी बातें बतातीं । सुनकर सींकवाली ताई खूब हैरान होतीं । मासूम बच्चों जैसा चेहरा बनाकर पूछतीं,''अच्छा ऐसा लिखा है तेरी किताब में ! बता बेटी, और क्या-क्या लिखा है तेरी किताब में ?''

यों थोड़े ही दिनों में नीना और सींकवाली ताई की ऐसी दोस्ती हुई कि जो भी देखता, हैरान होता । इस नन्हीं-सी बच्ची को भला क्यों सींकवाली ताई इतना प्यार करने लगीं ?

सींकवाली ताई को आँख से थोड़ा कम सूझने लगा है, यह भी सबसे पहले नीना को ही महसूस हुआ । हुआ यह कि एक बार नीना को घी-बूरा खिलाने के लिए रोक लिया ताई ने । घी-बूरा बना रही थीं, तभी नीना को शक हुआ, ताई घी में कहीं बूरे की जगह नमक तो नहीं डालने जा रहीं ? देखा तो टोका, ''क्या कर रही हो ताई ? यह बूरा नहीं, नमक है !''

सींकवाली ताई शर्मिंदा हो गईं, ''क्या करूँ बेटी ? आँख से कुछ सूझता ही नहीं । अच्छा हुआ जो तूने देख लिया ।'' कहते-कहते उनका चेहरा थोड़ा रुआँसा हो गया । गाँव में कोई उनसे हमदर्दी नहीं रखता था तो भला वे अपना दुख किससे कहतीं ?

नीना बोली, ''ताई, कहो तो मैं नानी से थोड़ा-सा काजल ले आऊँ ? मेरी नानी बहुत अच्छा काजल बनाती हैं । शायद उससे आपकी आँखें ठीक हो जाएँ ।''

''अच्छा, ऐसा काजल है उनके पास ? एक बार सुना तो था, पता नहीं किसने कहा था पर तेरी नानी देंगी मुझे ?''

मौलिक सृजन

'नदी और समुद्र' के बीच होने वाला संवाद अपने शब्दों में लिखिए ।

पठनीय

विनोबा भावे जी का अपने कार्यकर्ताओं को लिखा हुआ कोई पत्र पढ़िए ।

''देंगी क्यों नहीं ? अरे ताई, वो तो बहुत गुन गाती रहती हैं आपके । कहती हैं, सींकवाली ताई की जुबान भले ही कड़वी हो, पर दिल की बहुत अच्छी हैं । गाँव में उन जैसी भली और मेहनती औरत कोई और नहीं है ।'' नीना ने उत्साह से कहा ।

''अच्छा, ऐसा कहा तेरी नानी ने ? ऐसा !'' ''सच्ची कहा ताई ।'' कहकर उसी समय नीना दौड़ी-दौड़ी गई और नानी से माँगकर काजल की डिबिया ले आई । सींकवाली ताई ने सप्ताह-दो सप्ताह लगाया, तो आँख की जलन तो ठीक हो गई । थोड़ा-बहुत नजर भी आने लगा, मगर आँखें पूरी तरह ठीक नहीं हुईं । फिर तो नीना पर सींकवाली ताई का प्यार थोड़ा बढ़ गया । वे नीना को पास बिठाकर घंटों बातें करती रहतीं । प्यार से खिलाती-पिलातीं । कभी किसी दिन नीना उनके घर आने से चूक जाती, तो डंडा खटखटाते हुए चल पड़तीं । किसी तरह खुद को सँभालते हुए नीना की नानी के घर जा पहुँचती और प्यार से उसका हाथ पकड़कर ले आतीं । कहतीं, ''नीना, तू अपनी किताब भी ले ले । मुझे पढ़कर सुनाना ।''

नीना अपनी हिंदी की किताब में से कभी उन्हें सबको हँसाने वाले चतुर पीटर की कहानी सुनाती, तो कभी प्रेमचंद की दो बैलों की कहानी । सुनकर सींकवाली ताई कुछ देर तो चुप-सी रह जातीं फिर एकाएक कह उठतीं, ''सच्ची कहा भई, एकदम सच्ची कहा !'' और फिर खुद भी किसान और पिद्दी चिड़िया का किस्सा छेड़ देतीं या लोटन कबूतर का । नीना और सींकवाली ताई का यह प्यार गाँव के शरारती बच्चों को तो चुभ ही रहा था । बदला लेने के लिए उन्होंने सींकवाली ताई को तंग करना शुरू कर दिया । ताई दिन में सिर्फ एक दफे चूल्हा जलातीं और एक बार में रोटियाँ बनाकर पूरे दिन के लिए रख लेतीं । इसी को लेकर उधमी बच्चों ने गाना बनाया । वे चिल्ला-चिल्लाकर बोलते-

'सींकवाली ताई, सींकवाली ताई,
कितनी रोटी खाईं, कितनी बचाईं !
कितनी बिलौटे ने आकर चुराईं ?'

सींकवाली ताई मक्खन निकालकर एक छोटे से मर्तबान में रख देतीं और ढक्कन खोलकर उसी में से नीना को निकालकर दे दिया करती थीं । इसपर भी गाँव के बच्चों ने गाना बना लिया । वे ताई को सुनाते हुए खूब जोर-जोर से चिल्लाकर कहते -

'सींकवाली ताई, सींकवाली ताई,
खोल के ढक्कन खिला दे मक्खन !
तू पीना छाछ, हम खाएँ मक्खन !'

ताई को शरारती बच्चों की इस हरकत से गुस्सा तो बहुत आता, पर सब्र कर जातीं । बच्चों को भी पता था कि ताई को अब ज्यादा दिखाई नहीं पड़ता । तेजी से चल-फिर भी नहीं सकतीं तो फिर डर की क्या बात ?

संभाषणीय

'अंगदान का महत्त्व' इस विषय पर आयोजित चर्चा में अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

लेखनीय

किसी दिव्यांग व्यक्ति का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्न निर्मिति कीजिए।

❊ पर एक दिन की बात, बच्चों ने कुछ ज्यादा ही चिढ़ा दिया, तो ताई अपना गुस्सा काबू नहीं कर पाईं । लाठी लेकर पीछे-पीछे दौड़ पड़ीं । पर अभी कुछ ही आगे गई थीं कि एक गड्ढ़े में उनका पैर पड़ा लाठी दूर जा गिरी और ताई बुरी तरह लड़खड़ाकर जमीन पर आ गिरीं । सिर से खून निकलने लगा । एक पैर भी बुरी तरह मुड़ गया था और ताई हाय-हाय कर रही थीं । उन्होंने खुद उठने की दो-एक बार कोशिश की, पर लाचार थीं । बच्चे दूर से यह देख रहे थे । पर पास आने की उनकी हिम्मत नहीं हुई । आखिर गोलू और भीमा ने किसी तरह आगे आकर उन्हें सहारा दिया और उन्हें घर के अंदर ले गए । ❊

नीना ने सुना तो दौड़ी-दौड़ी घर गई, नानी को बुला लाई । नानी और नीना दोनों बड़े प्यार से सींकवाली ताई को अपने घर ले गए । पूरे महीने तक नीना अपनी नानी की मदद से सींकवाली ताई की खूब सेवा करती रही । उन्हें हल्दी मिला दूध पिलाया । सिर पैर पर हल्दी-तेल लगाकर पट्टियाँ बाँधीं । सींकवाली ताई के मुख से नीना के लिए लगातार आशीर्वाद निकलते रहते । उनकी कड़वाहट न जाने कहाँ गायब हो गई थी। यहाँ तक कि जिन बच्चों के कारण वे गिरीं, उनके लिए भी कोई कड़वा शब्द उनके मुँह से नहीं निकला ।

बच्चे पहले तो दूर-दूर, डरे-डरे से रहे पर फिर वे भी नीना के साथ मिलकर ताई की सेवा में जुट गए । महीने, डेढ़ महीने में ही पूरी तरह ठीक हो गईं । ताई को नीना और बच्चे ही उन्हें घर छोड़कर आए । अब तो बच्चे हर समय उन्हें घेरे रहते । अपनी किताबों में से पढ़-पढ़कर उन्हें कहानियाँ सुनाते । महाभारत और रामायण की कथाएँ भी । सुनकर ताई भी खुश होकर उन्हें दिलचस्प किस्से-कहानियाँ सुनातीं । कभी किसी अलबेले जादूगर की तो कभी पिद्दीपुर की महारानी की। बचपन में सुनी हजारों कहानियाँ सींकवाली ताई को याद थीं और उनका खजाना कभी खत्म होने में ही नहीं आता था । उन्हें सुन-सुनकर बच्चे हँसते । संग-संग ताई भी ।

अचरज की बात यह कि नीना की नानी के काजल का असर था या कि बच्चों की खिल-खिल का, सींकवाली ताई की आँखें भी काफी कुछ ठीक हो चली थीं ।

अब सींकवाली ताई कभी-कभी कहा करतीं, ''अब मैं समझ पाई हूँ कि प्यार लुटाने से ही प्यार मिलता है ।'' नीना मुसकराकर कहती, ''ताई, जब मैं बड़ी होऊँगी तो 'सींकवाली ताई की कहानियाँ' नाम से तुम्हारी कहानियों की किताब छपवाऊँगी ।'' सुनकर बलैयाँ लेती थीं ताई और इस तरह मीठी-मीठी, मोहक हँसी हँसतीं कि कुछ न पूछो ।

—०—

❊ परिच्छेद के आधार पर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

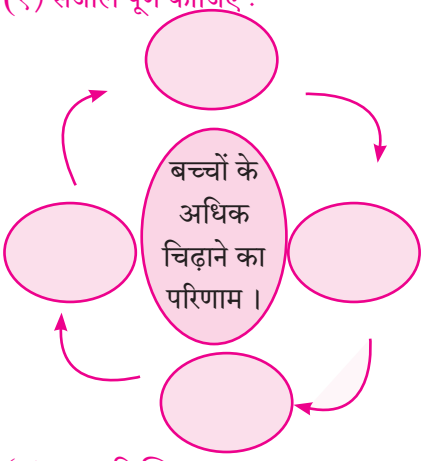

(२) उत्तर लिखिए :

'बच्चे दूर से यह देख रहे थे ।' इस वाक्य से होने वाला बोध

(३) परिच्छेद में आए शब्द युग्म :

(४) 'गुस्से पर काबू रखना' इसपर अपने विचार लिखिए ।

नेत्र दिव्यांग विद्यालय में स्वयं जाकर वहाँ की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

शब्द संसार

सींक (स्त्री.सं.) = पतला कड़ा डंठल
दिलेर (वि.फा.) = बहादुर, वीर, साहसी
खुशमिजाज (वि.फा.) = प्रसन्न चित्त
दबंग (वि. हिं.) = जबरा, प्रभावशाली
हमदर्दी (स्त्री. फा.) = सहानुभूति
मर्तबान (पुं.सं.) = बरनी
सब्र (पुं.सं.) = धैर्य
दिलचस्प (वि.फा.) = मनोरंजक

मुहावरे

उड़न–छू हो जाना = भाग जाना
बलैयाँ लेना = वात्सल्य प्रकट करना ।

https://youtu.be/9lHH3UbZhr0

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) संजाल पूर्ण कीजिए :

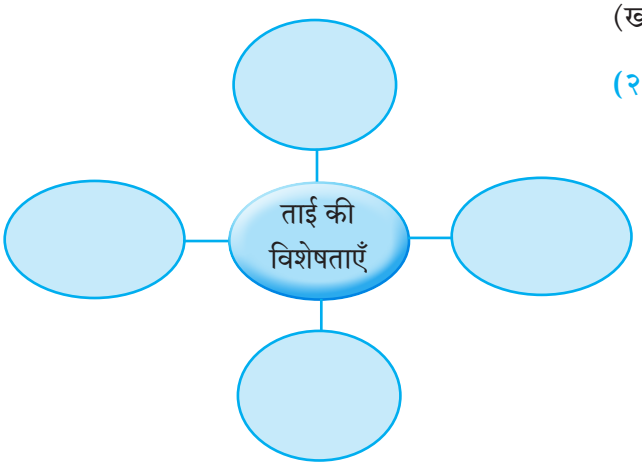

(ख) कहानी में प्रयुक्त पात्रों के नामों की सूची बनाइए ।

(२) ताई का वात्सल्य प्रकट करने वाले वाक्य ढूँढकर लिखिए ।

पाठ से आगे

बच्चों से प्रेम करने वाले महापुरुषों के जीवन के कोई प्रसंग बताइए ।

स्वमत

'प्यार लुटाने से ही प्यार मिलता है' इसपर अपने विचार लिखिए ।

रचना बोध

.....
.....
.....

भाषा बिंदु

शुद्ध-वाक्य

१. अशुद्ध शब्द को रेखांकित कर वाक्य शुद्ध करके तालिका में लिखिए :-

क्र.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
१.	अनेक व्यक्तियों ने प्रदर्शनी देखी ।	
२.	मैं बात को हँसी से टाल गया ।	
३.	कल मैंने उसका साथ करा था ।	
४.	गोपाल जानता है कि शायद उसका मित्र बीमार है ।	
५.	तुम मेरे मित्र हो, मैं आपको खूब जानता हूँ ।	
६.	गत रविवार वह मुंबई जाएगा ।	
७.	वहाँ कोई लगभग एक दर्जन सेब रहे होंगे ।	
८.	तुमने मेरी पुस्तक क्यों नहीं लौटा दी है ?	
९.	हिंदी शब्दों को, प्रयोग के आधार पर लेखन करना ।	
१०.	मैं लिखना-पढ़ना करने लगा हूँ ।	

पर्यायवाची

२. निम्न शब्दों के तीन पर्यायवाची शब्द रिक्त स्थान में लिखिए :-

क्र.	शब्द	पर्यायवाची शब्द			
१.	अन्य	भिन्न			
२.	अनुचर				
३.		हर्ष			
४.		खेतिहर			
५.	मनुष्य				
६.		रत्नाकर			
७.		अरण्य			
८.	सुगंध				
९.		पर्ण			
१०.	पवन				